



https://printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

अंग दर्द सिंड्रोम

के संस्करण 2016

३. काम्प्लेक्स रीजनल पेन सिंड्रोम टाइप १:
(पर्यायवाची: रफ्लेक्स समिपैथेटिक डस्ट्रॉफी, लोकलाईज्ड इडओपथिक मस्क्युलोस्केलेटल पेन सिंड्रोम)

३.१. यह क्या होता है?

यह अंगों में होने वाला तीव्र दर्द होता है जिसका कोई कारण ज्ञात नहीं होता व जिसके साथ त्वचा में परिवर्तन भी देखे जाते हैं।

३.२. यह कतिनी आम बीमारी है?

यह कतिनी आम बीमारी है इस बारे में ठीक से जानकारी नहीं है। यह बीमारी कशिरों में (औसतन १२ वर्ष की आयु में) खास कर लड़कियों में पायी जाती है।

३.३. इस बीमारी के प्रमुख लक्षण क्या होते हैं?

आमतौर से अंगों में लम्बे समय से अत्यधिक दर्द होता है जिसकी तीव्रता बढ़ती रहती है और विभिन्न दवाओं का असर नहीं होता। अधिकतर समय के साथ प्रभावति अंग को इस्तेमाल करने में भी तकलीफ महसूस होने लगती है।

हलके स्पर्श जैसी अनुभूतियाँ जो आमतौर से दुखदाई नहीं होती वह भी इन बच्चों को अधिक दुखदाई महसूस होती है, इसे "एलोडार्डिनआ" कहते हैं।

यह लक्षण बच्चों की दनिचर्या को भी प्रभावति करते हैं जिसकी वजह से उनकी शिक्षा पर भी प्रभाव पड़ता है।

समय के साथ कुछ बच्चों के अंगों में सूजन होना या पसीना आना, रंग में परिवर्तन (सफ़ेद पड़ जाना या बैंगनी धब्बे पड़ जाना) इत्यादि हो सकता है। बच्चे प्रभावति अंग को इस्तेमाल नहीं करते व उसको विभिन्न मुद्रा में रखते हैं।

३.४. इस रोग का निदान कैसे किया जाता है?

कुछ वर्ष पहले तक इस बीमारी को वभिन्न नामों से जाना जाता था परन्तु अब इस बीमारी को सभी चकित्सक काम्प्लेक्स रीजनल पेन सिंड्रोम कहते हैं। इसके नदान के लिए कई प्रकार के मानदंडों का प्रयोग किया जाता है।

इस बीमारी का नदान बहुत हद तक इसके लक्षणों को पहचान कर किया जाता है जैसे शारीरिक जांच और विशेष प्रकार का दर्द (जो तीव्र व लम्बे समय तक रहने वाला होता है, जिसमें अंग का इस्तेमाल करने में तकलीफ रहती है, दवाओं का असर नहीं होता व ऐलोडार्डिन आ होता है)

रोगी के द्वारा बताये गए व चकित्सक द्वारा देखे गए लक्षणों के संयोजन से इस बीमारी के नदान के निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है। इस के नदान के लिए यह भी आवश्यक है की मरीज को ऐसी कोई भी बीमारी न हो जिसका इलाज बच्चों के चकित्सक के द्वारा किया जाता हो। इसके बाद ही बच्चे को बच्चों के गठिया रोग विशेषज्ञ को मलिन्या चाहिए। लेबोरेट्री की जांच साधारणतय ठीक होती है व एम आर आई में हड्डी, जोड़ अथवा मांसपेशी में कोई विशेष तकलीफ दिखाई नहीं देती।

३.५. इस बीमारी का इलाज कैसे करते हैं?

फ़ज़ियोथेरेपिस्ट व ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट के निर्देशन में एक बेहतर व व्यायाम के क्रम को करना इस बीमारी का मुख्य इलाज है। साइको थेरेपी का इस्तेमाल ज़रूरत पड़ने पर किया जा सकता है। इन सब के साथ या अलग से कुछ और चकित्सा पद्धत भी इस्तेमाल की गयी है, जैसे अवसाद दूर करने की दवा, बायो फीड बैक, त्वचा के नीचे इलेक्ट्रिक नर्व स्टिम्युलेशन व व्यवहार संशोधन। इन सभी का नतीजा लगभग एक सा ही है। दर्द कम करने की दवा से आमतौर से कोई असर नहीं होता है। फलिहाल इस बीमारी के होने के कारन का पता लगाने व उसी मुताबकि उसका इलाज करने पर फलिहाल अनुसन्धान चल रहा है। इस बीमारी का इलाज सबके लिए कष्टप्रद होता है: बच्चे, परिवारजन व इलाज करने वाली टीम। इस बीमारी के कारण होने वाली मानसिक चिंता के लिए मनोवैज्ञानिक सलाह की आवश्यकता पड़ती है। इस बीमारी में इलाज तब नाकाम होता है जब परिवारजन इसके नदान को मान नहीं पाते व इसके लिए सुझाये गए इलाज की सभी पद्धतियों का पालन नहीं करते।

३.६. इस बीमारी का प्रोग्नोसिस क्या होता है?

व्यस्कों की तुलना में बच्चों में इस बीमारी का प्रोग्नोसिस बेहतर होता है। इसके साथ ही इस बीमारी से पीड़ित बच्चे व्यस्कों की तुलना में जल्दी ठीक हो जाते हैं। हालाँकि पूर्ण रूप से ठीक होने में समय लगता है व यह अवधि प्रत्येक बच्चे में अलग होती है। समय पर नदान व इलाज से प्रोग्नोसिस बेहतर होता है।

३.७. रोजमर्रा की दिनचर्या पर क्या प्रभाव होता है?

बच्चों को स्कूल जाने, नियमित कसरत व व्यायाम करने व संगी साथियों के साथ समय व्यतीत करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

